'मेघदूतम्' एक खण्ड काव्य है। व्याख्या करें।

'मेघदूतम्' संस्कृत साहित्य का एक अनुपम ग्रन्थ है। इस काव्य में कालिदास ने रोचक कथावस्तु को जिस लालित्यमय ढंग से संजोया है, वह अन्यत्र अप्राप्य है। रोचक आख्यान, चित्ताकर्षक प्रकृति-वर्णन, सरस पदावली और उपमा आदि सरस अलंकारों का संवेत रूप इस काव्य में देखने को मिलता है। उपर्युक्त विशिष्टताओं के कारण ही यह काव्य इतना लोकप्रिय हुआ कि परवर्ती कवियों ने इसका आधार बनाकर अनेक दूत-काव्यों यथा हंसदूतम्, पवनदूतम् आदि अनेक काव्यों की रचना की। किन्तु कवि कालिदास की इस मौलिक एवं मदमस्त कर देनेवाले काव्य के आगे सभी दूतकाव्य गौण हैं। काव्य की परिपक्वता, कल्पना की ऊँची उड़ान और विषय का धारावाहिक प्रवाह जैसा इस काव्य में है वैसा अन्यत्र कहीं देखने को नहीं मिलता है।

संस्कृत वाङ्मय का यह काव्य खण्डकाव्य के रूप में जाना जाता है। यह महाकाव्य नहीं है क्योंकि इसमें सर्ग तथा धीरोदात्त कोटि के नायक का अभाव है। साहित्य-दर्पणकार ने खण्डकाव्य की परिभाषा इस प्रकार दी है :—

"खण्डकाव्यम् भवेत्काव्यस्यैकदेशानुसारि यत्"।

अर्थात् खण्डकाव्य में जीवन के किसी एक खण्ड का ही चित्रण होता है न कि सम्पूर्ण जीवन का। इस प्रकार इस ग्रन्थ के खण्डकाव्य होने में कोई संदेह नहीं रह जाता क्योंकि इसमें यक्ष जैसे व्यक्ति के जीवन के एक ही भाग (विरहपूर्ण जीवन) का वर्णन है। दूसरे शब्दों में कालिदास के इस खण्डकाव्य में कुबेर के शाप से निर्वासित यक्ष के मात्र एक वर्ष के निर्वासित जीवन पर प्रकाश डाला गया है। यक्ष को कुबेर कर्तव्यहीन होने के कारण एक वर्ष के लिए रामगिरि पर्वत पर निर्वासित करता है। प्रिया विरहित यक्ष के विरहपूर्ण जीवन का अत्यन्त मार्मिक चित्रण कालिदास ने इस ग्रन्थ में किया है। आठ मास येन-केन प्रकारेण व्यतीत करने के बाद जब यक्ष आकाश में मेघ को देखता है तो अपना धैर्य खो बैठता है। वह चेतन अचेतन के भेद को भूलकर मेघ जैसे अचेतन पदार्थ से

प्रिया के पास संदेश ले जाने के लिए निवेदन करता है। वह मेघ को अपना अनुज मानकर अलकानगरी में संदेश भेजता है।

इस खण्डकाव्य को गीतिकाव्य भी कहा जाता है क्योंकि यह गेय है। इसके सभी श्लोकों को आसानी से गाया जा सकता है। यक्ष के विरही जीवन एवं मेघ के प्रति अपने प्रेम का वर्णन कवि कालिदास ने विप्रलम्भ रस में किया है। विप्रलम्भ रस के कारण यह काव्य वस्तुतः विरहगीत हो गया है। इस खण्डकाव्य के सभी श्लोकों मन्दाक्रान्ता छन्द में निबद्ध है। किसी व्यक्ति के विरहपूर्ण जीवन के वर्णन में मन्दाक्रान्ता छन्द का ~~प्रयोग करके इस खण्डकाव्य~~ ही आश्रय लिया जाता है। कवि ने विप्रलंभ के साथ मन्दाक्रान्ता छन्द का प्रयोग करके इस खण्डकाव्य को और भी जीवन्त बना दिया है। छोटी सी कथावस्तु को कल्पना की उड़ान भर कवि ने जिस प्रकार संजोया है वह अत्यन्त दुर्लभ है। विरही यक्ष के विरहपूर्ण जीवन से सम्बद्ध मन्दाक्रान्ता छन्द में लिखी गई श्लोकों को आसानी से गाया जा सकता है। मन्दाक्रान्ता छंद में एक विरही यक्ष की वेदना भरी वह कहानी लिखी गई है जो मानव के हृदय को सहज ही प्रतिभूत कर देती है।

इस खण्डकाव्य की सर्वाधिक विशिष्टता यह है कि इसमें कवि ने अचेतन पदार्थ को चेतन रूप में वर्णित किया है। मेघ जैसे निर्जीव पदार्थ को कवि ने चेतन रूप में तथा साथ ही नदियाँ आदि को मेघ की नायिका आदि के रूप में चित्रित किया है। कवि की यह देन है कि इसमें प्रकृति-पदार्थों का मानवीकरण किया है। मानव के दुःख-दर्द, हार-पारहारा आदि के दर्शन इन पदार्थों में भी स्पष्ट रूप से होते हैं।

इस प्रकार यक्ष के एक वर्षीय जीवन का वर्णन जिस प्रवाहमयी शैली, मन्दाक्रान्ता छन्द तथा विप्रलंभ रस में किया गया है, वह अवश्यतः श्लाघनीय है। संस्कृत काव्य के सभी

गीतिकाव्यों में यह खण्डकाव्य अपना अन्यतम स्थान रखता है। इसमें कवि ने अपनी कवित्व शक्ति का जिस कुशलता के साथ परिचय दिया है वह अन्य कवियों के गीतिकाव्यों में अप्राप्य है। अपनी इन विशिष्ट विशेषताओं के कारण ही यह खण्डकाव्य संस्कृत साहित्य की हीरक माना गया है।